महादेवी के काव्य में वेदनापरक अनुभूति

(डॉ. सरिता)

छायावाद के स्तम्भ रूप में विख्यात महादेवी के काव्य की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है और इनकी आध्यात्मिकता का मूल आधार चेतन ब्रह्म है। महादेवी की वेदनानुभूति में इसी परम तत्व की अभिव्यक्ति मिलती है। प्रियतम से बिछोह और उसे खोजने की आकुलता महादेवी के काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य है। वेदना की अनुभूति यद्यपि छायावादी कवियों में दृष्टिगोचर होती है। छायावाद के कलेवर में प्राण तत्व का संचार करने वाली महादेवी ने आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के मूल में चित्रित किया है। हृदय में सूक्ष्म भाव 'पीड़ा' की अविच्छिन्न अभिव्यक्ति इनके काव्य में दिखाई देती है।

कवयित्री के जीवन दर्शन में वेदना का यह स्वर अत्यन्त मार्मिक है क्योंकि इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति से न होकर सम्पूर्ण संसार से है। महादेवी वैयक्तिक सुख के विश्व वेदना में घोलकर जीवन को सार्थक मानती है और वैयक्तिक दुख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। विरह का संगीत महादेवी जी की आत्मा को झंकृत कर देता है। वेदना इनके जीवन को प्रज्वलित करती है। साधारणतः व्यक्ति जीवन में सुख का साक्षात्कार करना चाहता है और दुखों का त्याग किन्तु महादेवी के काव्य में उसके विपरीत स्थिति लक्षित होती है। जीवन की क्षणभंगुरता से त्रस्त महादेवी दुख के प्रति आकर्षित है। उनकी वेदना नीरस नहीं सरस है। वह वेदना का संसार त्यागना नहीं चाहती। वियोग व्यथा की यह धारा महादेवी की चेतना में इस प्रकार व्याप्त है कि वह दुखी विश्व को शीतलता प्रदान करने के लिए बादलों की भांति घिर घिर कर झरने की इच्छा रखती है –

घन बनूँ वर दो प्रिय मुझे

नित घिरूँ झर झर मिटूँ प्रिय।

विश्व के प्रति वेदना का यह भाव अनेकता में व्यक्तिगत सीमाओं को पार कर ही सम्भव हो सकता है। यद्यपि आचार्य शुक्ल आदि विभिन्न आलोचकों ने महादेवी जी की पीड़ा को अनुभूतिजन्य न मानकर अनुमानित, काल्पनिक व बौद्धिक स्वीकार किया। परन्तु, पीड़ा को जाने बिना पीड़ा की इतनी सशक्त अभिव्यक्ति सम्भव नहीं। दुख के असीम प्रवाह को महादेवी ने आत्म बोध का कारण माना है और इसे अपने जीवन में वरदान स्वरूप ग्रहण किया है।

महादेवी जी की वेदनानुभूति उनके हृदय और आत्मा का सौंदर्य है। महादेवी जी ने वियोग का चरमोत्कर्ष अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। उनका दुख सुख की अतिशयता का ही परिणाम है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उचित प्रतीत होता है कि सुख से आधिक्य के कारण उन्होंने पीड़ा को आनन्दमय मान लिया है। किन्तु महादेवी जी जीवन भर आंसुओं की माला गूँथना ही नहीं चाहती अपितु सुख को आत्मसात करना चाहती है। उसे जीवन के एक कोने में बंद नहीं करना चाहती है। अतृप्त प्रेम की पीड़ा का मार्मिक चित्रांकन इनके काव्य में हुआ है। वह पीड़ा को ही अपना जीवन मानती है

दुख की भावना से जीवन में शक्ति आ जाती है, आत्मा का परिष्कार होता है –

महादेवी के काव्य में गम्भीरता एवं तीव्रता है। महादेवी प्रेम की पीड़ा का अनुभव निरन्तर करती है। उनका जीवन ही पीड़ामय हो गया है। वे ब्रह्म की ऐसी निष्काम साधिका है जो गौण रूप में दीप शिखावत् स्वयं को निरन्तर जलाती रही है और उसी में तल्लीन होकर सुख मंगल मनाती रही है।

महादेवी के काव्य में दुखवाद व प्रेम की पीर का समावेश किंचित सूफी प्रेम कवियों के प्रभाव से और कुछ उपनिषदों के तपवाद से प्रभावित होकर आया है। महादेवी के काव्य में इसी विरहानुभूति को देखकर कुछ आलोचकों ने आधुनिक काव्य की मीरा कहा है।

विरह प्रेम की कसौटी है, यह प्रेम को परिपक्व बनाता है। सुख से व्यक्ति की भावनायें संकीर्ण और दुख में व्यापक हो जाती हैं इसी व्यापक भावना से करूणा का जन्म होता है। यह विश्व और उसकी वेदना, उसकी एक एक गतिविधि हर क्षण उनकी चिन्ता के दायरे में है। 'दुविधा' शीर्षक कविता में वे कहती हैं

वेदना की भावना महादेवी जी को निराशा के अन्धकार से आक्रान्त नहीं करती अपितु वह माधुर्य रस से सिंचित है–

पीड़ा के माधुर्य में विरोधाभास का यह सौंदर्य अद्‌भुत है। पीड़ा का संबन्ध प्रेम से है और वह प्रिय प्रदत्त ही है चाहे वह अलौकिक प्रियतम द्वारा दी गई हो, उसके पीछे माधुर्य की गहराई को समझा जा सकता है। महादेवी को वेदना से शीतलता मिलती है। प्रिय के विरह में शून्यता का आभास तो होता है किन्तु शून्यता भी आनन्ददायिनी है। वे 'अपने इस सूनेपन की 'मैं हूँ रानी मतवाली' कहकर आनन्द की चरम सीमा पर पहुँचाने में पीड़ा का आश्रय लेती हैं। अतः महादेवी के जीवन का आधार यह पीड़ा ही है

महादेवी जी पीड़ा में ही सफलता व जन कल्याण का अनुभव करती है। पीड़ा मानव को सहनशील बनाती है। विरह की पीड़ा से तृप्त होकर प्रेम निखर उठता है। विरह से उत्पन्न आनन्द में ही वह विभोर होना चाहती है –

विरह की रात्रि की समाप्ति की प्रतीक्षा वह नहीं करती –

महादेवी जी एक हठीली साधिका है। अन्य साधक अपनी साधना की सिद्धि चाहते हैं किन्तु महादेवी जी पीड़ा की साधना को स्वीकार करती हैं। चिर विरह चाहती हैं। प्रिय से मिलन नहीं चाहती हैं। प्रेमी और प्रिय जब तक अलग हैं, तब तक उनका अस्तित्व है। वह प्रिय से मिलकर अपना अस्तित्व समाप्त नहीं करना चाहती और न ही मुक्ति की कामना करती हैं –

इस प्रकार अलौकिक प्रिय के प्रति प्रेम का निवेदन करने पर भी वह आत्मा परमात्मा के एक्य को स्वीकार नहीं करती उनका प्रिय सारी प्रकृति और विश्व में व्याप्त है। इसलिए 'निहार' में जिस वैयक्तिक दुख की अनुभूति के स्वर हैं वही आगे के गीतों में समष्टि से सम्बधित हो गए हैं। महादेवी जी की पीड़ा विश्व पीड़ा को आत्मसात करती है –

जलते हुए दीपक की तरह प्रज्वलित होकर भी दूसरों का मार्ग प्रकाशित करना चाहती ळें महादेवी के काव्य में विरह की वेदना अत्यन्त प्रवहमान है इसलिए प्रियतम की स्मृति भी शाश्वत है। जीवन में सुख क्षणिक है। दुखों से आक्रान्त मानव इस जीवन में दुख की अनुभूति निरन्तर करता है। कुछ समय के लिए सुख की छाया भले ही मनुष्य के लिए आनन्दमय हो। किन्तु, मूलतः जीवन दुखों का क्रम है। इस जीवन दर्शन को अपने काव्य में अभिव्यक्त करने वाली महादेवी ने वेदना को ही ह्रदयंगम कर लिया है। महादेवी के काव्य में छायावाद की प्रमुख प्रवृति रहस्यवाद का भी अनुकरण दिखाई देता है। असल में जिन रागात्मक सम्बन्धों की परिकल्पना इनके काव्य में की गई है उसका अधिकतर हिस्सा रहस्यवाद की देन है। परमात्मा और जीवात्मा तथा असीम और ससीम दोनों रहस्यवादी रूपों में महादेवी का विरह, जीवन दर्शन बनकर उभरा है। हिन्दी साहित्य के आलोचक इनके रहस्यवाद को परिभाषित

करने में लगभग एक राय नहीं रहे। क्योंकि कहीं पर यह लौकिक है तो कहीं पर अलौकिक है। यह अपने आप में चिन्तन का विषय है कि महादेवी वर्मा ने अपनी रहस्यात्मक अनुभूति को समष्टिगत रूप में सामाजिक जीवन का अनिवार्य अंग बना दिया। इस कारण से रहस्यवाद के आधार को जानना काफी जटिल है। इन्होंने अभिव्यक्ति के इस प्रकार को सामाजिक सन्दर्भों में निर्मित किया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महादेवी का सम्पूर्ण काव्य सामाजिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है। कविताओं के माध्यम से समाज के एकाकी जीवन को पूर्णता देने के लिए इन्होंने रहस्यवाद का सहारा लिया। वेदना को भी जीवन दर्शन जैसी स्थापनाओं के साथ संयोजित करके महादेवी ने पीड़ा बोध को रचनात्मक बना दिया है।